

डॉ. अगस्त कोकेल, नीतिवचन, सत्र 22

© 2024 अगस्त कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

नीतिवचन की किताब पर बातचीत की श्रृंखला के आखिरी में आपका स्वागत है। हमने अपने अंतिम ध्यान में नीतिवचन के अंतिम अध्याय को कवर किया, वास्तव में आखिरी कविता, जो नीतिवचन की पुस्तक में शक्ति की महिला पर एक व्यंग्य है। जैसा कि हमने नीतिवचन पर हुई इन वार्ताओं में कई बार देखा है, ऐसे विषय हैं जो दोहराए जाते हैं।

उपयोगी चीजों में से एक है किसी विशेष विषय पर नीतिवचनों को एक साथ लाना। चूंकि नीतिवचन स्वयं उस तरह से इकट्ठे नहीं किए गए हैं, इसलिए उन विषयों में से कुछ को चुनना काफी मददगार हो सकता है जो हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं और बस यह देखें कि सभी अलग-अलग कहावतें उनके बारे में क्या कहती हैं। नीतिवचन, निश्चित रूप से, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, कहावतें हैं, वे सूक्तियाँ हैं जो एक अवलोकन है जिसे आप नीतिवचन के मामले में मानवीय संबंधों में सत्य देख सकते हैं, और कभी-कभी उन चीजों की सादृश्यता पर आधारित होते हैं जिन्हें आप देखते हैं प्राकृतिक संसार, कारण और प्रभाव के वैज्ञानिक अर्थ में नहीं, बल्कि साहचर्य के अर्थ में।

आप जानते हैं कि जब हवा पूर्व से आ रही है, मेरे मामले में, बारिश होने वाली है। इसमें कुछ भी वैज्ञानिक नहीं है। यह बस एक प्रकार का जुड़ाव है, और नीतिवचन दुनिया को उसी तरह से देखते हैं।

तो, नीतिवचन पर इस अंतिम चिंतन में मैं जो करना चाहता था वह नीतिवचन की पुस्तक में एक बहुत ही महत्वपूर्ण रूपांकन का एक नमूना देना है जो कि सभी विभिन्न प्रकार की नीतिवचनों के संदर्भ में विचार करने के लिए बहुत उपयोगी है। यह। हमने इनमें से कुछ कहावतों को पहले ही कवर कर लिया है, इसलिए यहां थोड़ी पुनरावृत्ति होने वाली है, लेकिन मैं अब इन कहावतों को एक-दूसरे के साथ जोड़ने जा रहा हूं, और न केवल एक-दूसरे के साथ, बल्कि अन्य ज्ञान लेखों के साथ भी। अब एक और ज्ञान लेखन है जिसमें हमारे विषय के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है, और वह है एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक।

मैं चाहता हूं कि हम जिस विषय को कवर करें, जैसा कि हम यहां स्क्रीन पर देख सकते हैं, वह काम और धन के बारे में है। अब मैंने दोनों को एक साथ रखा है क्योंकि कई मायनों में वे संबंधित हैं। बेशक, कोई केवल काम पर ध्यान केंद्रित कर सकता है, या कोई केवल धन पर ध्यान केंद्रित कर सकता है, लेकिन मैं उन दोनों को एक साथ देखने जा रहा हूं क्योंकि अक्सर हम कहते हैं कि समय पैसा है, और समय क्या है? यह वह प्रयास है जो हम काम करने में खर्च करते हैं, और इसी तरह हम धन उत्पन्न करते हैं।

तो, इन दोनों विषयों के बीच एक संबंध है, और यह विशेष रूप से उस व्यक्ति द्वारा विकसित किया गया है जिसे हम हिब्रू में कोहेलेट या उपदेशक कहते हैं। इसलिए, मैं उपदेशक के कुछ विचारों को नीतिवचन की पुस्तक में काम के बारे में क्या कहना है, के साथ जोड़ने जा रहा हूं

ताकि एक परिप्रेक्ष्य दिया जा सके कि बाइबल काम के बारे में क्या कहती है, और काम क्या होना चाहिए। इसलिए, मैं काम से संबंधित अपने अनुभव से शुरुआत करना चाहता हूँ।

और काम से संबंधित हमारे अनुभव के संदर्भ में, वास्तव में दो शब्द हैं जो महत्वपूर्ण हो जाते हैं। उनमें से एक का हमने कई बार उल्लेख किया है, यह एट्ज़ेव शब्द है, या यह एक नाव है। इसे किसी भी तरह से लिखा जा सकता है।

किसी भी मामले में, यह दर्द के क्रम पर कुछ है, यह संघर्ष है। संभवतः इसके लिए हमारे पास जो अंग्रेजी शब्द है वह है टॉयल। उपदेशक एक अलग शब्द का उपयोग करता है, यह इयान है, हम इसे यहां देखने जा रहे हैं जब हम अपने कुछ अंशों से गुजरते हैं, और उस शब्द का संबंध व्यस्तता से है।

यही वह चीज़ है जो हर समय हम पर हावी रहती है। अब ये दो बातें हमारे जीवन के बारे में सच हैं। हममें से अधिकांश को समय के विभिन्न बिंदुओं पर अपना काम कठिन लगता है।

अर्थात्, यह वास्तव में किसी न किसी प्रकार का बहुत सारा प्रयास है। इसमें हमारा बहुत सारा समय लगता है, हमारी बहुत सारी ऊर्जा लगती है, और दुर्भाग्य से अक्सर वह परिणाम नहीं मिलता जो हम चाहते हैं। और यहीं दर्द का हिस्सा आता है।

क्योंकि हम किसी चीज़ में बहुत अधिक प्रयास करते हैं और फिर वह आग में भस्म हो जाती है, बाइबिल के रूपक का उपयोग करने के लिए। यानी, अंततः, यह उस तरह से नहीं मिलता जैसा हम चाहते हैं। अब, इस बारे में बाइबिल का दृष्टिकोण क्या है कि हम काम को इतनी व्यस्तता के रूप में क्यों अनुभव करते हैं? अथवा हम कार्य को इस परिश्रम के रूप में क्यों अनुभव करते हैं? मेरे लिए एक छंद जो इसे इतनी अच्छी तरह से व्यक्त करता है वह भजन 127 है।

भजन 127, हममें से ज्यादातर लोग परिवार पर जोर देने के कारण याद करते हैं, और भजन 127 एक भजन है जो कहता है, बच्चे प्रभु की विरासत हैं, धन्य है वह व्यक्ति जिसके पास तरकश भरा है। तो, यह बच्चों की तुलना आपकी महान संपत्ति के रूप में करना है, जैसे तीर सैनिक के लिए संपत्ति हैं। अब, यह सदैव सत्य है।

हम यह भूल जाते हैं कि हमारे वर्तमान समय में अधिक जनसंख्या और अन्य सभी चीज़ों के बारे में कुछ भ्रम है। अब यह बिल्कुल स्पष्ट है कि हमारी समस्या अधिक जनसंख्या नहीं, बल्कि घटती जनसंख्या है। यह चीन में पहले से ही तेजी से हो रहा है और भारत में भी होने वाला है और अमेरिका में भी बहुत तेजी से हो रहा है।

हमारी आबादी वास्तव में कम हो रही है और यह अल्पावधि में बहुत परेशानी पैदा करने वाली है क्योंकि बहुत सारे बूढ़े लोग होंगे। अतः बच्चे भगवान की धरोहर हैं। जन्म एक अद्भुत चीज़ है।

दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है, ऐसा कुछ भी नहीं है जो महिला की ताकत को इससे अधिक दर्शाता हो कि वह बच्चों को जन्म देने वाली है और उसका एक परिवार है, जैसा कि नीतिवचन

अध्याय 31 में गुणी महिला कहती है। लेकिन भजन 127 भी इसी तरह से शुरू होता है। जब तक यहोवा उसे न बनाए, तब तक राजमिस्त्रियों का घर बनाना व्यर्थ है।

अब, मुझे लगता है कि यह न केवल एक भौतिक घर का संदर्भ है, बल्कि यह एक परिवार का भी संदर्भ है। भगवान ने डेविड को एक घर देने का वादा किया है और मुझे लगता है कि भजन 127,1 डेविड के घर की बात कर रहा है। यह परमेश्वर ही है जिसे दाऊद का घर बनाना है।

जब मामला डेविड पर छोड़ दिया गया है, तो उसके बच्चे एक-दूसरे को मार रहे हैं। यह केवल तभी होता है जब भगवान राजा को नियुक्त करते हैं और भगवान राज्य का निर्माण करते हैं और भगवान राजा के माध्यम से अपनी इच्छा पूरी करते हैं कि वहां डेविड का घर होता है, जो अंततः हमारे प्रभु यीशु मसीह में सच हो जाता है। और फिर भजन 122 कहता है कि यह व्यर्थ है कि तुम नगर की रक्षा करते हो जब तक कि परमेश्वर तुम्हें नगर की रक्षा करने में सक्षम नहीं बनाता है और यह व्यर्थ है कि तुम पीड़ा की रोटी खाते हो।

दूसरे शब्दों में, आप जीवन भर काम करते हैं क्योंकि आपको ठीक वैसा ही खाना चाहिए जैसा पॉल 2 थिस्सलुनिकियों अध्याय 3 पद 10 में कहता है। काम मत करो, तुम मत खाओ। यह उन दिनों बिल्कुल सच था जब उनके पास ये राज्य सामाजिक कार्यक्रम नहीं थे।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि ये बुरी चीजें हैं, बल्कि मैं यह सुझाव दे रहा हूँ कि मनुष्य काम के बिना नहीं रह सकते। भजन 127, यह व्यर्थ है कि तुमने मेहनत की रोटी खाई और मैं बस राजा को स्वीकार करने जा रहा हूँ, मसोरेटिक पाठ यहां, भगवान अपनी प्यारी नींद को देते हैं। दूसरे शब्दों में, अगर हम अपने काम, अपनी मेहनत के साथ भगवान पर भरोसा कर सकते हैं, तो कभी-कभी यह बहुत मुश्किल होता है।

हम रात को सो सकते हैं। मैं उस खेत से आता हूँ जहाँ ज्यादातर काम हाथ से किया जाता था और मेरे माता-पिता ने नौ बच्चों का पालन-पोषण किया। उन्होंने ऐसा संभवतः अपने जीवन में मेरी एक वर्ष की आय से कम आय पर किया।

लेकिन निःसंदेह, उन्होंने इसे अन्य तरीकों से किया क्योंकि हमने अपना खाया हुआ लगभग सारा भोजन जुटा लिया। और मेरी माँ ने हमारे द्वारा पहने जाने वाले ढेर सारे कपड़े बनाए। वह नीतिवचन 31, सदाचारी महिला थी।

लेकिन एक काम जो मेरे पिताजी करते थे वह था रात को सोना। वह केवल रात को ही नहीं सोता था। जब हमें कंपनी मिली और वह सोफे पर बैठ गया और उसने आराम किया, तो वह कई अद्भुत बातचीत के माध्यम से सो गया जो उसने कभी नहीं सुनी थी।

प्रभु अपने प्रिय को नींद देते हैं। यह उनके परिश्रम का एक प्रकार से पुरस्कार है। लेकिन हमारे पास यह परिश्रम है।

क्यों? खैर, यह हमें उत्पत्ति और हमारे ज्ञान के वृक्ष की ओर वापस ले जाता है। और हम कहते हैं, ओह, मैं जानने जा रहा हूँ कि क्या अच्छा है। और फिर जब हम तय करते हैं कि हमें यह जानना

है कि क्या अच्छा है, तो अचानक हमें पता चलता है कि, ओह, मेरे खेत में जो कुछ बढ़ रहा है वह कुछ ऐसा है जो मैं नहीं चाहता।

मैं इसे खरपतवार कहता हूं। मैं नहीं जानता कि फसलें उस तरह कैसे उगाऊं जैसा मैंने सोचा था। परमेश्वर ने हव्वा से कहा, तुम जानती हो, बच्चों को जन्म देना कष्टदायक होगा।

और अगले ही अध्याय में क्या होता है? कैन, उसका बेटा, हाबिल को मारता है। अब, मैं उस माँ के दर्द की कल्पना भी नहीं कर सकता जिसका एक बच्चा दूसरे बच्चे को मार डाले। निःसंदेह, यह अभी भी होता है।

लेकिन यही हकीकत है। सामूहिक रूप से, मनुष्य के रूप में, हम सभी को भगवान की तरह बनना हमारी पसंद है। और यह कहने का हमारा विकल्प कि हम यह जानने जा रहे हैं कि इस इत्सेव, इस इत्सेपोन के बारे में क्या अच्छा है।

इसका उपयोग ईव और परिवार तथा एडम और उसके कार्य दोनों के संबंध में किया जाता है। तो यह वह दुनिया है जिसमें हम रहते हैं। उत्पत्ति अतीत की किसी दुनिया का वर्णन नहीं कर रही है।

यह वास्तव में वर्तमान दुनिया का वर्णन कर रहा है। हमें अतीत में दुनिया कैसी थी, इसका बहुत ही संक्षिप्त विवरण देता है। हम उस शहर के बारे में कुछ नहीं जानते जहाँ से कैन आया था या जिस शहर से उसने शासन किया था।

हम नहीं जानते कि वह कहाँ था। हमें इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है। यह बिल्कुल अधूरा है।

हमें उनकी पत्नी के बारे में भी कुछ नहीं पता। यह उस दुनिया के बारे में हमें बताने का मुद्दा नहीं है जो थी। इसका उद्देश्य हमें उस दुनिया के बारे में बताना है।

और संसार क्या है? खैर, जैसा कि उपदेशक कहते हैं, यह एक व्यस्तता है। अब, उपदेशक के पास एक विलासिता थी। उसकी विलासिता यह थी कि वह वास्तव में अपार धन संचय कर सकता था।

और वह अपनी हर इच्छा की संतुष्टि अर्जित कर सका जो उसने सोचा था। और उसने क्या खोजा? खैर, उन्होंने जो पाया वह यह है कि भले ही आपके परिश्रम और आपके काम का परिणाम बहुत अधिक धन हो और आपके पास जो कुछ भी वांछनीय है उसे संतुष्ट करना हो, लेकिन यह आपके जीवन को बेहतर बनाने के लिए कुछ भी नहीं करता है। क्या अद्भुत बात है।

लेकिन निस्संदेह, उपदेशक बिल्कुल सही है। यह बिल्कुल सच है। वह परिश्रम, केवल धन पाने के लिए व्यायाम करना, या परिश्रम, अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए व्यायाम करना, सबसे असंतोषजनक चीज़ होगी।

तो, हमारी ये सारी व्यस्तता है। अनिवार्यतः, इसमें हमारा बहुत सारा समय लगता है। और हम अपने जीवन में आने वाले समय को समझ नहीं पाते हैं।

जन्म लेने का समय, मरने का समय। शांति का समय, युद्ध का समय। ये समय क्यों होना चाहिए? वह, शांति का समय और युद्ध में जाने का समय, मेरे लिए सबसे प्रभावशाली है।

युद्ध कौन करता है? लोग। खैर, अगर लोग युद्ध करते हैं, तो निश्चित रूप से लोग युद्ध रुकवा सकते हैं। खैर, हम सोच सकते हैं कि हम कर सकते हैं, लेकिन यह पूरी तरह से असंभव साबित हुआ है।

1929 में प्रथम महायुद्ध के बाद यह संधि हुई कि दोबारा कभी आक्रमण नहीं होगा। और हां, क्या हुआ? खैर, उसके 10 साल बाद, 1939 में हिटलर पोलैंड पर आक्रमण कर रहा था। इतना तो हो गया कि अब आक्रामकता नहीं रही।

और फिर दूसरे विश्व युद्ध के बाद, हमने कहा, ठीक है, कोई आक्रामकता नहीं होगी। लेकिन वहां क्या था? सर्वत्र युद्धों की बहुलता। निःसंदेह, देश अपने भीतर लगातार युद्धरत हैं।

जैसा कि हम यहां खड़े हैं, जैसा कि मैं आज यहां खड़ा हूं, रूस ने यूक्रेन पर आक्रामक रूप से आक्रमण किया है। इसलिए, हम इसे रोक नहीं सकते। तो फिर ये सारी व्यस्तता क्या है? ईश्वर ने संसार को हमारे मन में बसाया है।

यह हमारी बड़ी इच्छा है। लेकिन हम यह नहीं समझते कि भगवान यह सब शुरू से अंत तक कैसे कर रहा है। परमेश्वर का कार्य और हमारा अपना परिश्रम कुछ रहस्य है।

बिल्कुल वैसा ही जैसा उपदेशक सभोपदेशक 8 श्लोक 16 और 17 में कहता है। मैंने भजन 90 का कई बार प्रचार किया है। जहां हम पढ़ते हैं कि ईश्वर हमें वापस मिट्टी में मिला देता है।

ईश्वर अनादि से अनन्त तक है। लेकिन हमारे वर्ष बहुत सीमित हैं। 70 मूसा कहते हैं।

और यदि हम स्वस्थ और मजबूत हैं, तो भी वे 80 वर्ष के हो जाते हैं, फिर भी वे परिश्रम करते हैं। और उनका अभिमान उपद्रव है। तो हम क्या कर सकते हैं? खैर, मूसा कहते हैं, खुशी के लिए प्रार्थना करो और पूर्ति के लिए प्रार्थना करो।

नीतिवचन यही कहते हैं। उपदेशक यही कहता है। आप काम से जो तलाशते हैं वह है आनंद, तृप्ति और संतुष्टि।

वह परमेश्वर यह सब कार्य लेगा और इसे अपने कार्य का भाग बनाएगा। तभी हमारा काम संतोषजनक और सार्थक हो जाता है। इसलिए काम ही जीवन के लिए उचित है।

हमने नीतिवचन अध्याय 10 में सुलैमान के संग्रह के पहले भाग में नीतिवचन की उस सुंदर समरूपता के साथ शुरुआत की। आलस्य गरीबी पैदा करता है, परिश्रम धन पैदा करता है। उस कृत्य के परिणाम की तरह।

और हां, आप कहते हैं, ओह, लेकिन यह सच नहीं है। मैं कुछ आलसी लोगों को जानता हूं जो अमीर हैं। और मैं कुछ मेहनती लोगों को जानता हूं जो लगातार गरीब बने रहते हैं।

यह सच है। लेकिन इस मामले की सच्चाई यह है कि हमें अपनी ज़रूरतों और जीवन के लिए जो कुछ भी प्रदान करना है वह काम से ही आएगा। नीतिवचन यही कह रहे हैं।

और चींटियाँ हमें इसके बारे में सिखा सकती हैं। और हमने इसे नीतिवचन अध्याय 6 में देखा। वे जानते हैं कि गर्मियों के दिनों में अपना भोजन कैसे इकट्ठा करना है ताकि फसल उस समय हो सके जब उसे होना चाहिए। और वास्तव में हमें हमारी बातचीत में नीतिवचन 24, 30 से 34 देखने को नहीं मिला।

लेकिन वहाँ बुद्धिमान व्यक्ति आलसियों की भूमि से होकर जाता है और खेत में उगी हुई जंगली घास और टूटी हुई बाड़ और एक पूरे दृश्य को देखता है जो पूरी तरह से अनुत्पादक है और जो आवश्यकता पैदा करता है। तो जहाँ काम नहीं, वहाँ नुकसान है। मुझे हमेशा एक पादरी की याद आती है जो खेत पर उन व्यक्तियों में से एक से मिलने गया था।

और आँगन की सुन्दरता और जानवरों तथा अन्य सभी चीज़ों को देखकर वह कहता है, हे भगवान, भगवान ने तुम्हें यहाँ कितना सुंदर खेत दिया है। और किसान ने कहा, हां, भगवान ने मुझे एक सुंदर खेत दिया है, लेकिन तुम्हें इसे तब देखना चाहिए था जब भगवान के पास यह सब था। अब, यह एक बहुत ही उचित अवलोकन है क्योंकि भगवान का मतलब काम के लिए जीवन है।

उसने हमें इसे रोपने और इसे बनाए रखने के लिए इस दुनिया में रखा है। उत्पत्ति अध्याय 2 में, सृष्टि के आरंभ में विलाप यह है कि ज़मीन पर काम करने वाला कोई नहीं था। हमें जो करना चाहिए, काम उसका हिस्सा है।

लेकिन हमने पाया कि यह काम कठिन है। अब, उपयोगी। मुझे नीतिवचन 14, 23, 24 पसंद हैं।

काम करने में योग्यता है। कहावत है कि जहाँ काम होगा, वहाँ फायदा होगा। अब, यह वह लाभ नहीं हो सकता जिसकी आपने अपेक्षा की थी।

लेकिन भले ही वह मेहनत आपकी अपेक्षा के अनुरूप न हो, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उसमें कोई योग्यता या कोई मूल्य नहीं है। हमेशा योग्यता होती है और हमेशा मूल्य होता है। और फिर उपदेशक, शुरुआत में ही, अपने पूरे छोटे पाठ का निष्कर्ष बताता है।

वह कहते हैं, इसलिए, मैंने काम किया, मेरे पास यह सारी संपत्ति थी और मैंने अपनी हर इच्छा पूरी की। और मैंने क्या खोजा? सबसे अच्छी बात यह है कि मैं हर दिन अपने काम का आनंद उठाऊं और हर दिन मेरे पास जो भोजन है उसका आनंद उठाऊं। और अगर मैं उस काम का आनंद ले सकता हूँ जो मैंने किया है, अगर मुझे इस परिश्रम में किसी प्रकार की संतुष्टि मिल सकती है, और अगर मैं उस भोजन से संतुष्ट हो सकता हूँ जो भगवान ने मुझे दिया है, तो मेरे पास वास्तव में सबसे अच्छा है।

मुझे सब कुछ मिल गया है। और यह उस बात का सार है जो उत्पत्ति ने शुरुआत में ही हमसे वादा किया था जब भगवान स्वर्ग और पृथ्वी बनाते हैं। अब, काम के बारे में कई बातें कही जा सकती हैं जिन्हें ध्यान में रखना ज़रूरी है।

उनमें से पहला यह है कि काम धन उत्पन्न कर सकता है, और काम धन पैदा करना अच्छी बात है, लेकिन यह अच्छी बात नहीं है अगर यह सम्मानजनक तरीके से उत्पन्न न हो। अब, हमने नीतिवचन अध्याय 8 में ज्ञान के कार्य को देखा, वह संपूर्ण खंड जहां नीतिवचन एक व्यक्ति, एक व्यक्तित्व के रूप में बोलता है। लेकिन जिन चीजों के बारे में वह वहां बोलती है उनमें से एक सम्मानजनक धन है।

दूसरे शब्दों में, वह कहती है, बुद्धि वह तरीका है जिससे आप काम कर सकते हैं ताकि उस काम के लाभ और उसके द्वारा उत्पादित धन सही और अच्छा हो, और यही वह है जो आप पाना चाहते हैं। अब, हमने नीतिवचन 16, पद 26 पर थोड़ा समय बिताया। हम अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए काम करते हैं।

अब, यदि हम अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए काम करते हैं, तो यह गुलामी बन जाती है, और गुलामी बनने का कारण यह है कि हमारी इच्छाएँ कभी भी पूरी तरह से संतुष्ट नहीं होती हैं। धन के लिए काम करना एक बुरा व्यवसाय है, और यहाँ उपदेशक की टिप्पणियाँ हैं। आप जानते हैं, आप जीवन भर काम करते हैं, और फिर किसी दुस्साहस के कारण, किसी दुर्भाग्य के कारण, आप अपनी सारी संपत्ति खो देते हैं, और आपके पास अपने बच्चों को छोड़ने के लिए भी कुछ नहीं होता है।

खैर, यह हर तरह के लोगों की कहानी है। तो, ऐसा नहीं है, यह कहना एक भ्रांति है, ठीक है, मैं कड़ी मेहनत करने जा रहा हूँ ताकि मेरे पास अपने बच्चों को छोड़ने के लिए कुछ हो। इस बात का कोई आश्वासन नहीं है कि आप अपने बच्चों को अपने चरित्र, अपने प्रभाव और अपनी अच्छी शिक्षा के उदाहरण के अलावा कुछ भी छोड़ सकते हैं क्योंकि धन पर हमारा नियंत्रण नहीं है।

जैसा कि कहावत है, धन को पंख लगते हैं और वह उड़ जाता है। ये तो ऐसे ही चला गया। इसलिए यह सोचने में सावधान रहें कि हम धन के लिए काम करने जा रहे हैं, यहां तक कि अपने बच्चों के लिए भी छोड़ने जा रहे हैं, क्योंकि अंत में हम कुछ भी नहीं छोड़ेंगे, और यह बहुत सारे अलग-अलग तरीकों से हो सकता है, और अभी यूक्रेन में, मेरी यूक्रेन में प्रिय मित्र, और मेरे पास उनमें से एक अच्छी संख्या है, पुतिन के बमों के कारण अपने जीवन का सारा काम खो रहे हैं।

उस पर उनका नियंत्रण नहीं था, लेकिन वे अपने बच्चों को छोड़ने जा रहे थे, उनमें से बहुतों के लिए मलबा है, खासकर खार्किव शहर में। तो, हमें याद रखने की ज़रूरत है कि अधिक की इच्छा एक जाल हो सकती है, और उपदेशक बिल्कुल वही बात कहता है जो हमने सभोपदेशक 6, श्लोक 7 से 9 में नीतिवचन में देखा है। क्योंकि धन अतृप्त है, इसका क्या उपयोग है इसे अर्जित करने की बुद्धि? आपको हमेशा अधिक की आवश्यकता होती है। और यहां तक कि गरीब व्यक्ति के पास मौजूद ज्ञान को भी आसानी से खारिज किया जा सकता है।

इस पर कोई ध्यान नहीं देगा. तो सिर्फ इसलिए कि आप बुद्धिमान व्यक्ति हैं और सिर्फ इसलिए कि आप जानते हैं, यह भी कोई आश्वासन नहीं है कि कोई लाभ होने वाला है। और निःसंदेह, हम जो चाहते हैं उसका पीछा करना कभी-कभी हमारे पास जो है उसे हासिल करने से वंचित कर सकता है।

अर्थात्, हो सकता है कि आप उस खूबसूरत मैदान को चाहते हों जिसे आप सड़क के उस पार देखते हैं, लेकिन उसे चाहने और उसकी इच्छा करने से वह आपसे वह छीन सकता है जो आपके पास हो सकता है। अर्थात्, ईश्वर की सुंदरता और उसमें जो कुछ भी है उसे देखने का आनंद। उपदेशक उस श्लोक में यही कह रहा है।

इसलिए, जैसा कि हमने देखा है और जैसा कि नीतिवचन 23 में ज्ञान की बातों में हमारे पास है, धन एक बहुत ही क्षणभंगुर लाभ है। तो, यह मुख्य बिंदु है जो ज्ञान काम के बारे में कहता है। वह कार्य एक ऐसा अंत है जो अपने आप में अच्छा है।

व्यस्त नहीं होगा। इसका मतलब यह नहीं है कि इसमें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। लेकिन इसका मतलब यह है कि एक लाभ है जिसका आप आनंद ले सकते हैं।

ऐसा करने पर आपको एक लाभ प्राप्त हो सकता है। और यदि आपके काम से आपको वह मिलता है जिसकी आपको हर दिन आवश्यकता है, और आपके पास यह जानने की बुद्धि है कि अपने आस-पास के लोगों के साथ सद्भाव में कैसे रहना है, तो काम ने अपने सभी उद्देश्य पूरे कर लिए हैं। और यदि आप काम को किसी और चीज़ में बदलने की कोशिश करते हैं, जैसे कि धन का संचय, या प्रतिष्ठा और शक्ति प्राप्त करना, या इस तरह की सभी चीज़ें, तो काम आपको गुलाम में बदल देगा।

और यह एक वास्तविक परिश्रम होगा, और यह ऐसी व्यस्तता होगी जिससे आप कभी बच नहीं सकते। इसलिए बुद्धि हमें ईश्वर के आदर्श पर वापस लाना चाहती है। और भगवान का आदर्श क्या है? काम अच्छा है और काम जरूरी है।

मैंने पिछले दिनों हमारे चर्च में काम पर एक सत्र का नेतृत्व किया, और इसकी शुरुआत इस सवाल से हुई कि हमें सेवानिवृत्ति के इस विचार के बारे में कब पता चला? यानी, जीवन में एक ऐसा मोड़ आता है जब मैं काम करना बंद कर देता हूँ। मैंने उस प्रश्न के बारे में सोचा क्योंकि एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में हर कोई मुझसे हमेशा पूछता रहता है, क्या आप जानते हैं, क्या आप सेवानिवृत्त हो गए हैं, या आप कब सेवानिवृत्त होने वाले हैं? और सिर्फ यह कहना कि, ठीक है, सेवानिवृत्ति बाइबिल में नहीं है, अधिकांश लोगों के साथ बहुत अच्छी तरह से पंजीकृत नहीं होता है। तो, मुझे खुद से यह सवाल पूछना पड़ा कि सेवानिवृत्ति का यह व्यवसाय कहां से आता है? अच्छा, क्या आप जानते हैं कि यह कहाँ से आता है? इसकी शुरुआत 19वीं शताब्दी में हुई, लेकिन यह विशेष रूप से मंदी के दौर में लागू हुई।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद, जब युवाओं के लिए नौकरियाँ पैदा करने की आवश्यकता थी। तो, कुछ राजनेताओं का विचार था, अगर हम बूढ़े लोगों से कह सकें, आपको काम करने का अधिकार

नहीं है, आप काम करना बंद कर दें, और हम आपको भुगतान करेंगे ताकि आपको काम करना बंद न करना पड़े, और फिर युवा लोग आपकी नौकरियाँ ले सकते हैं, हम एक बेहतर समाज बनाने जा रहे हैं, और हम इसे सेवानिवृत्ति कहेंगे। और अब, निःसंदेह, आप जानते हैं, हमने सेवानिवृत्ति को लगभग बाइबिल की एक अनिवार्य चीज़ बना दिया है जिसे हर किसी को करना होता है।

और इसलिए, यदि आप काम करना बंद नहीं करते हैं ताकि किसी और को नौकरी मिल सके, तो आप एक तरह के अत्याचारी हैं। खैर, मैं आपको आश्चस्त कर दूँ, यह मानवीय सोच है, यह दैवीय सोच नहीं है। दैवीय सोच में, काम जीवन के हर चरण के लिए उपयुक्त जीवन का एक हिस्सा है।

बेशक, मैं 30 और 40 के दशक की तरह काम नहीं करता, लेकिन मुझे यह मत बताइए कि सिर्फ इसलिए कि मैं 73 साल का हूँ, भगवान की अब कोई इच्छा नहीं है कि मैं जिस तरह से भी काम कर सकूँ। ओह, मैं निश्चित रूप से अपनी पेंशन से खुश हूँ। मेरा विश्वास करो, मैं उन पर निर्भर हूँ।

मैं अब पूरी जीविका नहीं कमा सकता। सेवानिवृत्ति के बारे में सब कुछ बुरा नहीं है। बस इसे धर्म न बनाएं क्योंकि सेवानिवृत्त लोगों को काम की ज़रूरत होती है।

काम जीवन का एक हिस्सा है, लेकिन काम को अपने जीवन को समृद्ध बनाने वाला बनाएं, न कि ऐसा कुछ जो आपके जीवन को गुलाम बना दे। यही ज्ञान का संदेश है।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकेल हैं। यह सत्र संख्या 22, कार्य और धन है।